उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्य नाथ जी ने डायबिटीज मैनेजमेंट में डॉ राजकिशोर सिंह द्वारा प्रशिक्षित गोरखपुर केंद्र के 14 डॉक्टरों को प्रमाण-पत्र के साथ सामुहिक फोटो सत्र का अवसर दिया।*
30 नवंबर 2018, गोरखपुर / उत्तर प्रदेश

उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्य नाथ जी ने आज यहां दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय में महायोगी श्री गुरू गोरखनाथ शोध पीठ के शिलान्यास समारोह के मौके पर पब्लिक हेल्थ फाउंडेशन ऑफ इंडिया(PHFI) के सर्टिफिकेट कोर्स इन एविडेंस बेस्ड डायबिटीज मैनेजमेंट(CCEBDM) के तहत डॉ राजकिशोर सिंह द्वारा विशेष रूप से प्रशिक्षित 14 डॉक्टरों को प्रमाण-पत्र के साथ सामुहिक फोटो सत्र का अवसर प्रदान किया। इस मौके पर आयोजित समारोह में केंद्र और राज्य सरकार की कई विशिष्ट हस्तियां मौजूद थीं। उक्त अवसर पर बी आर डी मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ गणेश कुमार, मेडिसिन विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ राजकिशोर व पब्लिक हेल्थ फाउंडेशन दिल्ली के डॉ संदीप भल्ला ने क्रमशः माननीय मुख्यमंत्री जी, कुलपति गोरखपुर विश्वविद्यालय प्रोफेसर वी के सिह जी व अध्यक्ष विश्वविद्यालय अनुदान आयोग प्रोफेसर धीरेन्द्र पाल सिंह जी को स्मृती चिन्ह प्रदान किया।

पुर्वाचल मे डायबिटीज मरीजों की विकराल संख्या के सापेक्ष डायबिटीज चिकित्सा में विशेष रूप से प्रशिक्षित चिकित्सकों की कमी को दूर करने की आवश्यकता को समझते हुए बीआरडी मेडिकल कॉलेज, गोरखपुर में उक्त कोर्स के प्रथम बैच 2017-18 का संचालन किया गया।

बी आर डी मेडिकल कॉलेज गोरखपुर के प्रधानाचार्य डॉ गणेश कुमार ने बताया कि
“उत्तर प्रदेश में डायबिटीज के शिकार 8.36 मिलियन लोग रहते हैं। सेंट्रल ब्यूरो ऑफ हेल्थ इंटेलीजेंस – नेशनल हेल्थ प्रोफाइल रिपोर्ट 2018 के मुताबिक, 2017 में उत्तर प्रदेश के एनसीडी क्लिनिक में देखे गए 1,824,013 लोगों में से 296,552 को डायबिटीज होने का पता चला। डायबिटीज के मरीजों की देखभाल के लिए प्रशिक्षित विशेषज्ञों, एंडोक्रिनोलॉजिस्ट की कमी है। ऐसे में सीसीईबीडीएम पाठ्यक्रम के तहत डायबिटीज चिकित्सा में विशेष रूप से प्रशिक्षित उक्त 14 चिकित्सक, विशेषज्ञ चिकित्सकों की कमी पूरा करेगें और ये डायबिटीज के मरीजों की पहचान तथा उनका उपचार करने के योग्य होंगे। पुर्वाचल मे डायबिटीज मरीजों को नवीनतम व विश्वस्तरीय चिकित्सा प्रदान करने में इन विशेष प्रशिक्षण प्राप्त चिकित्सकों का महत्वपूर्ण योगदान होगा।

बी आर डी मेडिकल कॉलेज के मेडिसिन विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ राजकिशोर सिह ने बताया कि इस कोर्स के प्रथम बैच मे 14 चिकित्सकों ने प्रशिक्षण उपरांत परीक्षा उत्तीर्ण किया। डॉ राजकिशोर सिंह ने बताया कि जिला चिकित्सालय महराजगंज के सिनियर फिजीशियन डॉ अजय मोहन भाष्कर, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र पिपराइच के डॉ आनन्द कुमार, समुदायीक स्वास्थ्य केन्द्र फरेन्दा के डॉ अभिषेक श्रीवास्तव, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र सुकरौली के डॉ धर्मेन्द्र कुमार तिवारी, चन्दन हास्पिटल लखनऊ के डॉ किसलय कुमार, इ एस आई डिस्पेन्सरी खलीलाबाद के डॉ कृष्ण चन्द गुप्ता, इ एस आई डिस्पेन्सरी सहजनवा के डॉ नन्द किशोर, समुदायीक स्वास्थ्य केन्द्र सुकरौली के डॉ रामनारायण धर द्विवेदी, के एम सी डिजीटल हास्पिटल महराजगंज की डॉ रश्मी श्रीवास्तव, बी आर डी मेडिकल कॉलेज के ट्रामा सेन्टर के डा श्याम कृष्ण पाण्डेय, समुदायीक स्वास्थ्य केन्द्र बृजमनगंज के डॉ सुशील कुमार गुप्ता, संयुक्त मंडलीय चिकित्सालय फैजाबाद के डॉ संतोष कुमार तिवारी, आई एम ए क्लिनिक गोरखपुर

के डॉ विनय कुमार सिंह व प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र फरेन्दा के डॉ शंकर प्रसाद वर्मा ने डायबिटीज सर्टीफिकेट कोर्स प्रशिक्षण व परीक्षा उत्तीर्ण कर CCEBDM प्रमाण पत्र प्राप्त किया।

पब्लिक हेल्थ फाउंडेशन ऑफ इंडिया में निदेशक- प्रशिक्षण , डॉ. संदीप भल्ला ने कहा, “सीसीईबीडीएम पाठ्यक्रम को खासतौर से इस तरह डिजाइन किया गया है ताकि डायबिटीज चिकित्सक / फिजिशियंस की क्षमता नवीनतम व विश्व स्तरीय हो सके। इस मोड्यूल के तहत डायबिटीज प्रबंध में नवीनतम जानकारियों और अनुसंधान को शामिल किया गया है। प्रशिक्षण का फोकस इस बात पर रहता है कि प्रशिक्षित चिकित्सक डायबिटीज के मरीजों के उपचार के नतीजों को बेहतर करने के लिए जोखिम आकलन, रोग निदान, डायबिटीज का पूर्वानुमान, जीवनशैली सुधार और एविडेंस बेस्ड चिकित्सा करे और चिकित्सीय निर्णय इसी आधार पर ले।”
इंडिया स्टेट-लेवल डिजीज बर्डन इनीशिएटिव द्वारा नवीनतम अनुसंधान आकलन के मुताबिक, भारत में 20 साल और ऊपर के लोगों में डायबिटीज के मामले 1990 में 5·5% से बढ़कर 2016 में 7·7% हो गए। भारत के सभी राज्यों में डायबिटीज के मरीजों की संख्या या अनुपात में काफी अंतर है। वैसे तो, तमिलनाडु में डायबिटीज की मौजूदगी (9.6%) तथा केरल में (9.28%) है, पर उत्तर प्रदेश में देश भर के डायबिटीज मरीजों का सबसे बड़ा हिस्सा रहता है।
सीसीईबीडीएम की विशिष्ट ढंग से रचना की गयी है और चिकित्सक के लिए महीने में एक बार का यह एक्जीक्यूटिव ट्रेनिंग प्रोग्राम 12 स्टडी मोड्यूल के साथ 12 महीने में फैला हुआ है। यह ऑन दि जॉब (काम के दौरान) प्रशिक्षण कार्यक्रम है जिसका आयोजन महीने में एक बार रविवार को होता है। यह कोर्स पबलिक हेल्थ फाउंडेशन ऑफ इंडिया (पीएचएफआई), साउथ एशियन फेडेरेशन आँफ इन्डोक्राइन सोसाइटी (SAFES) और डॉ. मोहन्स डायबिटीज एजुकेशन ऐकेडमी (डीएमडीईए), चेन्नई द्वारा संयुक्त रूप से प्रमाणित है। यह चिकित्सकों को डायबिटीज प्रबंध के क्षेत्र में नवीनतम प्रगति से वाकिफ कराने तथा दैनिक काम-काज में इससे ज्यादा कार्यकुशलता से निपटने के लिए है। इस कोर्स में 16 जाने-माने राष्ट्रीय विशेषज्ञ और 274 क्षेत्रीय फैकल्टी शामिल हैं जो देश के जाने-माने डायबेटोलॉजिस्ट और एंडोक्रिनोलॉजिस्ट हैं। इस पाठ्यक्रम के तहत 2010 से अभी तक के पांच तक्र में देश भर में 10500 चिकित्सकों को प्रशिक्षण दिया जा चुका है। विभिन्न राज्यों मे तैनात राजकीय चिकित्सकों को सीसीईबीडीएम प्रशिक्षण देने के लिए पीएचएफआई की साझेदारी भिन्न राज्य सरकारों (हरियाणा, केरल, कोलकाता नगर निगम, उड़ीशा, मिजोरम और मध्य प्रदेश) से है।